Anusandhanvallari
Vol 2024, No.1
December 2024
ISSN 2229-3388

Caribbean Region in Contemporary Time : Opportunities and Challenges

समकालीन समय में कैरेबियन क्षेत्र : अवसर एवं चुनौतियां

डॉ० विनोद कुमार
सीनियर एकेडमिक रिसर्च, पोस्ट डॉक्टोरेट, पीएच० डी०
एम० फिल० यू० जी० सी० नेट एवं व्याख्याता
राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय महाविद्यालय बहादुरगढ़।

सारांश : कैरेबियन क्षेत्र अपनी रणनीतिक समुद्री स्थिति के कारण वैश्विक अर्थव्यवस्था सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह अटलांटिक महासागर, मैक्सिकों की खाड़ी और पनामा नहर को जोड़ता है। यह अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का एक प्रमुख केन्द्र है, वैश्विक पर्यटन के माध्यम से राजस्व का एक बड़ा स्रोत है और समुद्री जैव विविधता का एक महत्वपूर्ण संरक्षण क्षेत्र है। इस क्षेत्र का राजनीतिक महत्व बहुत ही व्यापक है क्योंकि इस क्षेत्र ने विदेश नीति के नए सिद्धान्त, शीतयुद्ध की गतिशीलता (क्षेत्रीय सुरक्षा पहलों को काफी हद तक प्रभावित किया है। वैश्विक महत्व होने के बावजूद, कैरेबियन क्षेत्र पर्यावरणीय और आर्थिक दबावों के प्रति भी असमान रूप सें संवेदनशील बना हुआ है इस क्षेत्र को पर्यटन पर निर्भर अर्थव्यवस्थाओं को उच्च उर्जा और आयात लागत का सामना करना पड़ता है, जिसके परिणास्वरूप लगातार संरचनात्मक और ऋण संबंधी चुनौतियां उत्पन्न होती हैं प्रस्तुत शोध पत्र इस क्षेत्र में उपलब्ध अनेक अवसरों जिसमें क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य नीतिगत विकल्पों और साझा हितों के क्षेत्रों को भी उजागर करता है।

संकेताक्षरः कैरेबियन, सुरक्षा चुनौतियां, भू–राजनीतिक तनाव, सशस्त्र हिंसा, गिरोह, कोविड महामारी, भ्रष्टाचार, अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग, आर्थिक सहयोग।

परिचयः कैरेबियन क्षेत्र वैश्विक भू–राजनीति, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार और पर्यावरण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। जब हम किसी भी क्षेत्र का राजनीतिक और सांस्कृतिक अध्ययन करते हैं तो पूर्वार्ध तथा उत्तरार्ध दो भागों में विभाजित करते है इसके पूवार्ध भाग में राजनीतिक पहचान का अध्ययन करते हैं राजनीतिक पहचान राष्ट्रों के हितों से जुड़ी हुई होती है अंग्रेजी बोलने वाले द्वीपों की पहल से कैरेबियन समुदाय का उल्लेख किया जा सकता हैं 20वीं शताब्दी में कैरेबियन क्षेत्र के बारे में वेस्ट इंडिज' या 'एंटिल्स' का प्रयोग किया जाता था परन्तु प्राचीन काल से अब तक की इस विकास यात्रा के बाद इस क्षेत्र की परिभाषा बदल गई है साहित्य में "ग्रेट कैरिबयन बेसिन" जैसे दूसरे शब्द भी पाए जाते है, जो कैरिबियन द्वीप, मैक्सिको की खाड़ी, मध्य अमेरिका का पूर्वी हिस्सा, दक्षिण अमेरिका में वेनेजुएला और कोलंबिया के उत्तरी तटों के साथ एक बड़े क्षेत्र को दिखाते हैं। इसका अपवाद गुयाना है जो इस परिभाषा का हिस्सा नहीं है। जहाँ तक उत्तरार्ध की बात है तो यह जातीय और सांस्कृतिक पहचान से संबन्धित होता है जिसको हम एफ्रो–कैरेबियन के नाम से पहचानते हैं।[1] इस क्षेत्र का नाम उस स्वेदेशी जातीय समूह के नाम पर रखा गया है जिससे क्रिस्टोफर कोलंबस का सामना हुआ था उनका नाम कैरिब या आरावाक, ताइनो, और कैरिब जैसी स्वदेशी जनजातियों में यूरोपीय बीमारियों से लड़ने की कोई प्रतिरोध क्षमता नहीं थी, और बीमारी, युद्ध और गुलामी के कारण उनकी संख्या लगभग पूरी तरह से समाप्त हो गई।[2]

कैरेबियन क्षेत्र में नए अवसरः कैरेबियन क्षेत्र के प्रचुर प्राकृतिक संसाधन, विविध संस्कृतियों और क्षेत्रीय संबंध समावेशी विकास के लिए अनेक अवसर प्रदान करते हैं। यह क्षेत्र तेजी से पारम्परिक पर्यटन से आगे बढ़ रहा है, इस क्षेत्र में उभरते अवसर गुयाना के तेल भंडार, नीली अर्थव्यवस्था, नवीकरणीय उर्जा और डिजिटल अवसंरचना पर केन्द्रित है।[3] इस संदर्भ में निम्नलिखित बिन्दूओं के माध्यम से इस क्षेत्र से संबन्धित राष्ट्रों को निम्नलिखित उीारते हुए अवसरों का लाभ उठाना चाहिए।

नवीसरणीय उर्जा और जलवायु प्रौद्योगिकी

प्रत्येक देश चाहता है कि वहाँ के नागरिक एक उन्नत जीवन स्तर प्राप्त करें। इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कैरेबियन क्षेत्र में आयातित उर्जा पर अत्यधिक निर्भरता ने सौर पवन और भवापीय परियोजनाओं के संदर्भ में व्यापक बदलाव अनुभव किया गया है जिसके कारण इस क्षेत्र की जनता नवीन प्रौद्योगिकी की ओर कदम बढ़ा रही हैं।[4]

नीली अर्थव्यवस्थाः

नीली अर्थव्यवस्था का अर्थ समुद्र, महासागरों और तटलीय संसाधनों का इस तरह उपयोग करता है जिससे आर्थिक विकास और रोजगार बढ़े, और आजीविका बेहतर हो, परन्तु समुद्री परिस्थितिकी तंत्र को कोई नुकसान न पहुंचे। कैरेबियन देशों के लिए नीली अर्थव्यवस्था एक महत्वपूर्ण विकास प्रतिमान है जो सतत समुद्री और तटीय आर्थिक गतिविधियों पर केन्द्रित है। इनमें मछली पालन, समुद्री, उर्जा, तटीय पर्यटन और समुंद्री परिवहन जैसे क्षेत्र शामिल हैं। छोटे द्वीपीय देश होने के कारण, कैरेबियन क्षेत्र के लिए यह प्रतिमान; आर्थिक समृद्धि और जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए अतिआवश्यक है। निश्चित रूप से ये प्रतिमान या पहल नए उद्यमों का निर्माण करने में सहायक हो रहै हैं तथा लक्षित प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को आकर्षित कर रहै हैं।

डिजिटल नवाचारः कैरेबियन क्षेत्र में डिजिटल नवाचाार और परिवर्तन तेजी से आगे बढ़ रहे हैं जिससे विश्व बैंक और आईडीबी जैसे संस्थानों का भारत को समर्थन प्राप्त है, इसका मुख्य उद्देश्य ई–गवर्नेंस, डिजिटल कौशल, वितीय समावेशन जैसे मोबाइल वॉलेट और छोटे व्यवसायों को आधुनिक तकनीक से जोड़कर एक मजबूत डिजिटल अर्थव्यवस्था का निर्माण करना है। दुसरा, कैरेबियन डिजिटल ट्रांसफार्मेशन प्रोजेक्ट का प्राथमिक उद्देश्य डोमिनिका ग्रेनाडा, सेंट लूसिया और सेंट विसेंट और गेनाडीन्स के पूर्वी कैरेबियन राष्ट्रमंडल के भागीदार, व्यवसायों और व्यक्तियों द्वारा डिजिटल सेवाओं, प्रौद्योगिकियों और कौशल तक पहुंच बढ़ाना है।[5]

कृषि व्यवसाय और कृषि–प्रसंस्करण : कैरेबियन क्षेत्र में कृषि व्यवसाय और कृषि–प्रसंस्करण तेजी से उभरते हुए आर्थिक क्षेत्र हैं इस क्षेत्र का मुख्य लक्ष्य खाद्यय सुरक्षा सुनिश्चित करना और क्षेत्रीय खाद्य आयात को कम करना शामिल है। यह क्षेत्र कच्चे माल जैसे कोका, मसाले आय आदि को उच्च मूल्य वाले उत्पादों में बदला जाता है इस प्रक्रिया से इन वस्तुओं के निर्यात में वृद्धि होती है जिसके कारण आर्थिक विकास के अनेक अवसरों का सृजन होता है।[6]

रोजगार के अवसरः लैटिन अमेरिका और कैरिबियन क्षेत्र में रोजगार के अवसर अलग–अलग पाए जाते हैं परन्तु यहां के लोगों में एक सामान्य संस्कृति पाई जाती है वह है कड़ी मेहनत की संस्कृति। यहां पर यह धारण प्रचलित है कि केवल नौकरियां सिर्फ आय का साधन नहीं है बल्कि अपने नीजि रोजमार के माध्यम से भी अपना भरण–पोषण किया जा सकता है। इस क्षेत्र में प्रमुख रोजगार क्षेत्र को हम चार भागों में विभक्त कर सकते है। पर्यटन और आथित्य, चिकित्सा और स्वास्थ्य सेवा, सूचना प्रौद्योगिकी, समुद्री रोजगार आदि।[7]

प्रवासनः प्रवासन सदैव से ही कैरिबियन समुदाय का प्रमुख अंग रहा है जिसके कारण इस क्षेत्र के लोगों और समाज को फलने–फुलने का अवसर प्रदान किया है। इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्थाएं अगर सुधरी हैं तो इसके लिए ग्रनेडाइन्स, बैलीज, डोमिनिका, बारबाडोस

तथा सेंट–विसेंट द्वारा मुक्त आवागमन की प्रक्रिया को अपनाकर संभव हो पायी है। कैरिबियन समुदाय एक ऐसी पहल है जिससे भविष्य में प्रवास को एक सकारात्मक परिवर्तन लाने के उत्प्रेरक के रूप में वैश्विक मान्यता दी जाएगी। परन्तु इस तरह की पहल के लिए यह आवश्यक है कि इसका प्रबंधन उचित रीति और विवेकपूर्ण ढंसे से किया जाए। इस क्षेत्र के लोगों को इस प्रकार के अवसरों का लाभ उठाना चाहिए। ताकि वे स्वयं कैरिबियाई समृद्धि और लचीलेपन के लिए सुरक्षित और एक व्यवस्थित प्रवास से संबंधित परिवर्तनकारी क्षमता को समझ सकें।[8]

कैरिबियन क्षेत्र में प्रमुख चुनौतियां: कैरिबियन क्षेत्र के सामने अनेक अवसर उपलब्ध होने के साथ–साथ कुछ चुनौतियां भी पाई जाती है। जिनका विश्लेषण करना परमावश्यक है। ये इस प्रकार हैं।

गरीबी: कैरिबयन देशों में गरीबी और उससे जुड़ी सामाजिक समस्याएं शोधकर्ताओं तथा नीति निर्धारण कर्ताओं के लिए लंबे समय से एक बड़ी चुनौती रही है। इस क्षेत्र में गरीबी–विरोधी रणनीतियों और कल्याणकारी कार्यक्रमों का अभाव रहा है जिसके कारण यह क्षेत्र पिछड़ा हुआ है। दूसरे, कैरिबयन में औपनिवेशिक प्रभुत्व की जड़ें मजबूत रही है। औपनिवेशिक प्रभुत्व ने नस्ल, वर्ग और लिंग के आधार पर गरीबों का सामाजिक और आर्थिक शोषण किया। यद्यपि इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के जटिल, तथा परस्पर संबन्धित कारकों ने भी इस क्षेत्र में गरीबी को बढ़ाने में योगदान दिया है जैसे अनुपयुक्त मैक्रो आर्थिक नीतिबयां, श्रम बाजार में कमियां, अनौपचारिक क्षेत्र में कम उत्पादकता और कम मजदूरी तथा मानव संसाधन में अंतराल आदि। 1990 के उत्तरार्ध में कैरिबियाई देशों में किए गए गरीबी आकलन से प ता चला है कि गरीबों का मानव पूंजी आधार, जिसमें शिक्षा का स्तर भी शामिल है, निम्न स्वरूप वाले, उपल्बध रोजगार तथा कम कौशल वाले काम, कम वेतन वाले कामों तक ही सीमत थे। गरीब लोग आम तोर पर प्राथमिक व्यवसायों और ग्रामीण उद्यमों में कार्यरत थे। जैसे छोटे स्तर की खेती, हस्ताशिल्प और अन्य कई अनौपचारिक गतिविधियां। इसके अतिरिक्त, गरीबी से संबंधित आकलन में बरीबी के अंतर–पीढ़िगत हस्तांतरण के प्रमाण मिले, जिसका मुख्य कारण परिवारों में शिक्षा और कौशल का निम्न स्तर था। गुयाना और जमैका जैसे विशिष्ट समुदाय के लोगों में गरीबी का कोरण निंदा कर्म बताया जिससे रोजगार के अवसर न मिलने के कारण बेरोजगारी बढ़ी। हैती को पश्चिमी गोलार्ध का सबसे गरीब और कम विकसित राष्ट्र होने का दुर्भाग्यपूर्ण गौरव प्राप्त है, इसके साथ ही यह देश अनेक राजनीतिक समस्याओं से भी ग्रस्त रहता है। हैती में गरीबी का मुख्य कारण राजनीतिक भ्रष्टाचार, ब्रेन ड्रेन, व्यावसायिक एकाधिकार वनों की कटाई, पर्यटन में कमी तथा 1990 के आर्थिक प्रतिबंध आदि रहे हैं। डोमिनिकल गणराज्य, सेंट किटस और सेंट लुसिया उन द्वीपीय देशों में शामिल है जहाँ हाल के वर्षों में प्राकृतिक आपदाओं से लोगों की आजीविका बुरी तरह से प्रभवित हुई है।[9]

खाद्य असुरक्षा: कैरिबियन क्षेत्रों में खाद्य असुरक्षा एक गंभीर और बहुआयामी संकट है जहां लगभग आधी से भी ज्यादा जनसंख्या गंभीर खाद्य असुरक्षा का सामना कर रही है यह स्थिति मुख्य रूप से आयात पर अत्यधिक निर्भरता, जलवायु परिवर्तन के खतरों, लगातार प्राकृतिक संकटों और उच्च खाद्य किमतों के कारण उत्पन्न हुई है। इस क्षेत्र में अनेक प्रकार की प्राकृतिक आपदाएँ जैसे तुफान, बाढ़, सूखा तथा जवालामुखी अपना नकारात्मक प्रभाव छोड़ते रहते हैं। इसके परिणामस्वरूप खाद्य आपूर्ति श्रंख्ला नष्ट हो जाती है। जोआना ब्रिग्स संस्थान द्वारा खाद्य सुरक्षा के संदर्भ में पांच प्रमुख चुनौतियों और बाधाओं की समीक्षा या पहचान की गई। (क) द्वीपीय भूगोल, (ख) शासन में कमियां (ग) संस्थागत बाधाएँ (घ) सहयोग संबंधी बाधाएँ (ड) बाह्य रूप से उत्पन्न समस्याएं।[10] इन चुनौतियों से मिपटने के लिए स्थानीय स्तर पर सतत विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए बहुपरतीय रणनीति की आवश्यकता है। स्थानीय, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय नीति निर्माताओं के बीच साझा नियम निर्माण शक्ति संघर्ष प्रबंधन और ज्ञान–साझाकरण में सहयोगात्मक संस्थाओं की पहचान करके तथा विभिन्न पारस्परिक हित धारकों को साथ जोड़कर द्वीपों को खाद्य सुरक्षा की ओर बढ़ने में मदद करने के लिए एक बहुकेंद्रिय शासन प्रणाली को एक उपयुक्त तंत्र के रूप में अनुशंशित किया गया है।

लैंगिक असमानता: कैरिबियाइ क्षेत्र में लैंगिक असमानता एक गहरी और बहुआयामी चुनौती है, जिसका मुख्य कारण आर्थिक भगीदारी में कमी, व्यापक लिंग आधारित हिंसा, सीमित कानूनी सुरक्षा और कार्यस्थल पर भेदभावपूर्ण रवैया है। यद्यपि कैरिबियन क्षेत्र, महामारी से काफी हद तक

उबर चुका है, परन्तु अभी भी कार्यस्थल पर महिलाओं के अनुभवों को प्रभावित कर रही है अर्थात् यहां पर लैंगिक, असमानताएं अभी भी ज्यों की त्यों बनी हुई हैं। पर्यटन और घरेलू काम जैसे सबसे संवेदनशील क्षेत्रों में महिलाओं की संख्या अधिक है। जबकि विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और तेल एवं गैस जैसे अधिक वेतन वाले, पुरुष प्रधान उद्योगों में उनकी संख्या कम है। कैरिबियन क्षेत्र के कुछ देशों में प्रगति के अतिरिक्त, संरचनात्मक बाधाएं और सीमित कानूनी सुरक्षा, वास्तविक लैंगिक समानता में रूकावट डाल रही हैं।[11] एक कैरिबियन महिला का साक्षात्कार इस तथ्य को स्वीकारता है कि यहां पर लैंगिक असमानता बनी हुई है इनका कहना है कि "हम घर में कम से कम 10 गुना अधिक काम करते हैं जिसका कोई वेतन नहीं लेती हैं । अर्थात् हम अपने जीवन काल में 4 वर्ष अधिक काम करती हैं, और नींद, व्यायाम तथा आराम कम मिलता है। जिसका हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। जीवन के प्रत्येक स्तर पर समाज की बुराईयों, जैसे अपराध, हिंसा, दुर्व्यवहार और गरीबी के अधिकांश परिणामों से पीड़ित होती है। इंटनरेट और अत्याधुनिक उपकरणों तक कम पहुंच के कारण, हम वित्तीय समावेशन के निम्न स्तर का सामना करती हैं हम समान काम के लिए कम वेतन कमाती हें, कभी–कभी 50 प्रतिशत तक कम, जबकि इस संदर्भ में हम कैरिबियन पुरूषों की तुलना में अधिक कुशल और शिक्षित है। अधिक शिक्षित होने के बावजूद, कैरिबियन समाज में बेरोजगारों और अल्प रोजगार पाने वालों में हमारी संख्या लगातार सबसे अधिक रहती है।[12] अतः इन तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि जिन देशों में लैंगिक समानता का स्तर अधिक होता है, वहाँ आय का स्तर भी अधिक होता है और लैंगिक समानता से गरीबी भी दूर होती है। इसलिए कार्यस्थल तथा घरेलू संदर्भों में महिलाओं से संबन्धित नीतियां एवं कानून बनाने होंगे।

समाधान : इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए क्षेत्र के अन्दर और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के माध्यम से व्यापक और समन्वित प्रयासों की आवश्यकता है, जिनका उद्देश्य इस क्षेत्र में विविधीकरण, लचीलापन, निर्माता और सतत विकास है। निम्नलिखित बिन्दुओं पर विचार करने के उपरान्त इन समस्याओं एवं चुनौतियों का समाधान किया जा सकता है।

1. नीजी क्षेत्र के निवेश और रोजगार को बढ़ावा देना चाहिए।
2. लचीले बुनियादी ढांचे को आगे बढ़ाना चाहिए।
3. जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को समाप्त करने लिए कैरिबियन देशों को अपने–अपने देश में जलवायु परिवर्तन के अनुकूल स्थाई नीतियां लागू करना आवश्यक है।
4. कैरिबियन देशों को एक मजबूत सामाजिक सूरक्षा प्रदान करनी चाहिए।
5. शिक्षा और कौशल पर विशेष ध्यान देना चाहिए।
6. सार्वजनिक स्वास्थ्य।
7. व्यवस्थित आवागमन की स्वतन्त्रता।
8. व्यापक आर्थिक स्थिरता को मजबूत करना और ऐसे तकनीकों का प्रयोग करना चाहिए जिससे उत्पादन में वृद्धि हो।
9. कैरिबियन देशों को चाहिए की वे वित्तीय समावेशन की दिशा में कदम बढ़ाएं।
10. कैरिबियन देशों की सरकारों को वैश्विकृत दुनियां में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा देना चाहिए।
11. लैंगिक समानता के लिए आवश्यक कदम उठाना चाहिए।

12. गरीबी को समाप्त करने के लिए इस क्षेत्र की सरकारों को दक्षिण के देशों के साथ पारस्परिक रूप से सहयोग करना चाहिए।[13]

निष्कर्ष: इस संपूर्ण विवेचन के आधार पर स्पष्ट रूप से किसी एक मत का समर्थन नहीं किया जा सकता है। क्योंकि वैश्विक दक्षिण के राष्ट्र अभी भी विकास के उन लक्ष्यों को प्राप्त करने में सक्षम नहीं है जिनकी वे लम्बे समय से अपेक्षा करते आए हैं। इसके पिछे भौतिक तथा मानवीय तत्व उत्तरदायी है। कैरिबियन क्षेत्र भू–राजनीतिक तनावों से लेकर समस्त्र हिंसा और गिरोह, महामारी, प्रवासन, गरीबी तथा सुरक्षा चुनौतियों का सामना कर रहा है, जो मादक पदार्थों की तस्करी और मादक पदार्थों के मुख्य मार्गों पर प्रतिस्पर्धा और भी बढ़ गई है। यह क्षेत्र, व्यापक स्तर पर प्रवासन और मनी लॉन्ड्रिंग से भी प्रभावित हुआ है। कैरिबियन देशों को इन समस्याओं के समसधान के लिए एकीकृत उपायों की आवश्यकता है।[14] इस संदर्भ में संस्थाओं को मजबूत करना, अपराध और भ्रष्टाचार से लड़ना और असमानता और मादक पदार्थों की मांग जैसे मूल कारणों का समाधान किया जाना जरूरी है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए क्षेत्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता है जिसमें संयुक्त राज्य अमेरिका तथा कैरिबियन क्षेत्र के देश पारस्परिक रूप से सहयोग की दिशा में कदम बढ़ा सकते हैं। अमेरिका और कैरिबियन देशो के मध्य सहयोग की अप्पार संभावनाएं विद्यमान हैं जैसे आर्थिक एकीकरण, समुद्री सुरक्षा, उर्जा संक्रमण और आपदा प्रबन्धन।[15] अमेरिकी सरकार कैरिबियन बेसिन सुरक्षा पहल और अटलंटिक परिषद जैसे मंचों के माध्यम से इस क्षेत्र के साथ व्यापार, बन्दरगाह विकास और क्षेत्रीय स्थिरता को सुदृढ़ करने के लिए सक्रिय रूप से काम कर रही है।

संदर्भ

[1] जिटा टेजर, कैरिबियन क्षेत्र और पहचान को परिभाषित करना। **एक्टा हिस्पैनिका,** वा. 2, 2020, पृ. 203–6

[2] नादिन टी. फनांडीज, केरिबियनः क्षेत्र का परिचय जानकारी के लिए देखें मिलन पुस्तकाल्य, तथा राजनीतिक आर्थिक तथा भौगोलिक पहलूओं की जानकारी के लिए **एनसाइक्लोपडिया ऑफ ब्रिटेनिका** पर भी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

[3] विश्व बैंक समूह द्वारा प्रतिपादित कैरेबियन ब्लाग पर जाकर प्रस्तुत विवरण के बारे में सूचना प्राप्त की जा सकती है।

[4] कैरिबाईया क्षेत्र में **विश्व बैंक समूह**, वहीं।

[5] अधिक जानकारी के लिए पूर्वी केरिब्यिन दूरसंचार प्राधिकरण ब्लाक पर छपे लेख देख सकते हैं। इस क्षेत्र से संबंन्धित जितने भी विकासात्मक प्रोजेक्ट है। उनकी जानकारी यहां पर दी गई है।

[6] ओरेल डेले तथा अन्य, कैरेबियन के छोटे द्वीपीय विकासशील राज्यों में कृषि –खाद्य प्रणाली पर कोविड–19 के प्रभाव का आकलन", **सतत खाद्य प्रणालियों में सीमांत**, खण्ड 6, 13 जून 2022 अधिक जानकारी के लिए देखें कैरिबियन कृषि, ईवीएसको अनुसंधान डेटाबेस, का ब्लाग।

[7] "रोजगारः लैटिन अमेरिका और कैरेबियन में विकास का मुख्य आधार", **विश्व बैंक समूह ब्लॉग,**

[8] प्रवासन से संबन्धित अवसरों और चुनौतियों के सदर्भ में देखें वर्किंग पेपरों की श्रंखला, माइग्रेसन इन दी केरिबियन : करेंट ट्रैडस, ओपोरचुनिटिस एण्ड चेलैंजिज," इंटरनेशनल आर्गेनाइजेशन फॉर माइग्रेशन, 2017, कैरिबियन समुदाय अमेरिका, केरिबिरून तथा अटलांटिक महासागर में फैले 15 सदस्य देशों और कई संबद्ध क्षेत्रों का एक राजनीतिक और आर्थिक संघ है।

[9] ग्लेन ए. बोवेन, "कैरेबियन में गरीबी और सामाजिक चुनौतियां", **इंटरनेशलन जर्नल ऑफ सोशल बेलफेयर,** खण्ड–16, अंक–2, पृ. 150–157. सीडी. डीरे तथा अन्य (संपा.) **इन द सैडोस ऑफ द सनः केरिबियन डिवलेपमेंट अलटरनेटिवस एण्ड यू.एस. पालिसी, बाल्डर**, 1990.

[10] बी.राम, बैवरले लॉरेंस तथा फिजरोथ हैनरी, "फूड सिक्योरिटी एण्ड हैल्थ इन कैरिबियन इम्पेरेटिव्स फॉर पॉलिसी इम्पलिमेंटेशन", **जर्नल ऑफ फूड सिक्योरिटी,** वा.3, न.6 2015, पृ. 137–140 तथा मार्क वुडदिविरा और विधा दे. मेन्स, कैरिबियाई क्षेत्र में खाद्य और पोषण सुरक्षा की चुनौतियां, कैरिबियन अकेडमी ऑफ सांईसिज एलहम मोहम्मदी और अन्य सहयोगियों द्वारा खाद्य सुरक्षा के संदर्भ में पाँच मुख्य बाधाओं की पहचान की। इनके विवरणात्मक पक्ष को जाने के लिए देखें कैरिबियन में खाद्य सुरक्षा संबंधी चुनौतियां और विकल्पः एक प्रारंभिक समीक्षा से प्राप्त अंतदृष्टि,

[11] रिकेट्स एच. बाबरा, "कैरिबियन श्रम बाजारों में लिंग भेदता और सभ्य कार्य प्रावधान", **सामाजिक और आर्थिक अध्ययन,** वा. 52, न. 4, 2003, पृ. 49–80, तथा "2005 के लिए कार्य योजना : प्रमुख सीएआरआईकॉम कार्यक्रमों में लिग को मुख्य धारा में लाने के लिए ढांचा", सीएआरआईकॉम सचिवालय, जार्जटाउन, 2003.

[12] मार्ला दुखारन द्वारा उद्धृत में लिग को मुख्य धारा में लाने के लिए ढांचा, सीएआरआईकॉम सचिवालय, जार्जटाउन, 2003

[13] वही, तथा जे.ए. मोरिस, चेलेन्जिज फॉर द कैरिबियन, संयुक्त राष्ट्र जेनेवा, 2005.

[14] आर इवान एलिस, केरिबियाई क्षेत्र में सुरक्षा चुनौतियां : खतरे, प्रवासन और अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग, अप्रकाशित पीएटीडी ग्रन्थ, 2023

[15] वही.